ISSN 2349-137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

प्रतिध्वनि कला
संस्कृति की

# शोध लोक

वर्ष- 8, विशेषांक- 2, 2022
शोधार्थी अंक

# मैथिली लोक संस्कृति में लोकगीतों की जीवटता

**डॉ. प्रीति सिंह**
*सहायक आचार्य हिंदी विभाग*
*हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला*

**नेहा झा**
*शोधार्थी (हिंदी विभाग)*
*हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला*

**सार-संक्षेप**

*लोक साहित्य समाज की भाषा का हिस्सा है, भाषा का सबंध साहित्य से होता है और साहित्य का समाज और जीवन से सीधा सबंध होता है इसलिए लोकसाहित्य को समाज का आधार माना जाता है। भारतीय लोकसाहित्य इसलिए हमारे समाज और संस्कृति का आधार है।*

*आज आधुनिक समय में नई पीढ़ी के लिए 'लोक' शब्द मात्र एक पिछड़े पन का अर्थ है। लोक संस्कृति या लोक साहित्य को यह अनपढ़ लोगों की चीज समझने लगे है। ऊँची इमारते तथा मेट्रो सिटी का समाज खुद को इन लोक संस्कृतियों तथा लोक साहित्य से अलग मानता है परंतु मिथिलांचल समाज एक ऐसा समाज है जिसने अपनी संस्कृति तथा लोक साहित्य को अपनी धरोहर की तरह माना है। अपवाद वहां भी देखने को मिल जायेंगे लेकिन उत्तर भारत में अगर किसी संस्कृति ने खुद की अपनी अलग पहचान स्थापित की है तो उसमें मैथिली संस्कृति का नाम सबसे पहले उल्लेख किया जायेगा। लोकसाहित्य किसी भी समाज और संस्कृति की धरोहर होता है। लोक साहित्य लोक की बात कहता है। मैथिलि लोकगीतों ने मैथिलि लोक संस्कृति के उत्थान तथा विकास में एक अहम भूमिका निभाई है। मिथिलांचल के हर पर्व तथा व्रत में लोकगीतों की विशिष्ट जगह है। मिथिला संस्कृति तथा लोकगीतों में यहाँ की महिलाओं की अहम भूमिका है।*

**बीज शब्द**

*लोक संस्कृति, लोकसाहित्य, लोकगीत, मिथिलांचल समाज, लोकजन*

मैथिलि भारतीय भाषाई परिवारों में मागधी परिवार की भाषा के अंतर्गत आती है। भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही मैथिलि भाषा लोक साहित्य में अपना अहम योगदान देती आ रही है और संस्कृत साहित्य में भी मैथिलि की मौजूदगी देखी जा सकती है। बिहार की तमाम बोलियों एवं भाषाओं में सिर्फ 'मैथिलि' ही एक ऐसी भाषा है जिसमे 'विपुल साहित्य' मौजूद है। वैदिक काल से ही मिथिला में अनेक ऋषियों की उत्पति हुई। जिनमे वामदेव, गोतम रहूगणा, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, कपिल आदि का नाम बड़े सम्मान के साथ मैथिलि के संदर्भ में लिया जाता है। सामवेद और यजुर्वेद के कुछ मंत्रों का रचियता भी गोतम रहूगणा और याज्ञवल्क्य को माना जाता है। मैथिलि भाषा के कुछ और प्राचीन रूप अशोक के शिलालेखों में उपलब्ध मिलते है। साहित्य में मैथिलि का प्राचीन रूप 'बोद्ध गान ओ दोहा' में मिलता है। 'बोद्ध गान ओ दोहा' विभिन्न भाषाओं से मिलकर बना है जिसके अंतगर्त मगही, मैथिलि, बंगला और